प्रकृति कार्यक्रम की रिपोर्ट
(20 फरवरी, 2025)

भा॰ वा॰ अ॰ शि॰ प॰-हि॰ व॰ अ॰ सं॰, शिमला एवं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (कन्या), मंडी, हिमाचल प्रदेश के सहयोग से 20 फरवरी, 2025 को मंडी में प्रकृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्रधानाचार्य श्री अनिल कुमार तथा श्री पवन कुमार, वाणिज्य के व्याख्याता तथा अन्य शिक्षण स्टाफ सहित 150 छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत में श्री अनिल कुमार, प्रधानाचार्य ने संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पवन कुमार, वैज्ञानिक-एफ का स्वागत किया और कहा कि सिंथेटिक रासायनिक कीटनाशकों के हमारे पर्यावरण पर विविध दुष्प्रभाव होते हैं, जिसमें जल और मिट्टी का प्रदूषण, कीटों के प्राकृतिक शत्रु जैसे लाभकारी कीटों और मधुमक्खियों की हानि शामिल है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि अनजाने में हमारे किसान हानिकारक कीटों से अपनी फसलों की सुरक्षा के लिए कीटनाशकों की अधिक मात्रा का उपयोग करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी में अधिक विषाक्तता होती है और फसलों में अधिक अवशिष्ट समस्याएं होती हैं, जो अंततः मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। इसलिए हमें पौधों पर आधारित कीटनाशकों जैसे सुरक्षित वैकल्पिक तरीकों को अपनाना चाहिए, जो लाभकारी कीटों को नुकसान नहीं पहुंचाते।

डॉ. पवन कुमार ने अपने व्याखान में जंगलों, नर्सरी के हानिकारक कीटों तथा वृक्षों को उनके द्वारा पहुंचाए जाने वाले नुकसान के बारे में बताया। उन्होंने छात्राओं को कृत्रिम रासायनिक कीटनाशकों के दुष्प्रभावों जैसे मृदा एवं जल प्रदूषण तथा लाभदायक कीटों की हानि आदि के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में कीटों के प्राकृतिक शत्रुओं जैसे लेडी बर्ड बीटल, प्रेइंग मेंटिस आदि के बारे में बताया तथा कहा कि इनका प्रयोग हानिकारक कीटों से फसलों की सुरक्षा के लिए किया जा सकता है। उन्होंने नीम और पिस्सूमार आदि जैसे पादप आधारित कीटनाशक उत्पादों के बारे में भी जानकारी दी तथा कहा कि संस्थान ने 2 पादप आधारित फॉर्मूलेशन भी विकसित किए हैं अर्थात हिम बायोकिल-I तथा हिम एल्बिवाश जो देशी पादप बोएनिंगहौसेनिया एल्बिफ्लोरा से तैयार किए गए हैं। प्रस्तुति के पश्चात छात्राओं ने विशेषज्ञ से चर्चा की।

कार्यक्रम का समापन श्री अनिल कुमार, प्रधानाचार्य राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने हि॰ व॰ अ॰ सं॰ शिमला के निदेशक डॉ॰ संदीप शर्मा एवं कार्यक्रम के विशेषज्ञ डॉ. पवन कुमार, वैज्ञानिक-एफ और सभी छात्राओं का आभार व्यक्त किया। उनका मानना था कि इस तरह की गतिविधियों से छात्राओं को अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए नए रास्ते खुलते हैं और वे अपने परिवार को जैविक कीटनाशकों के इस्तेमाल का संदेश देने में भी मदद कर सकते हैं, जिससे कीटनाशक मुक्त खाद्य पदार्थों के उत्पादन में मदद मिलती है।

कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

****